ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 68 अंक 2 अक्टूबर 2020 आश्विन (अधिक) 2077 वार्षिक मूल्य 250 रु०

मानवता के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रत्येक दृष्टि से सुप्रभारत को जागरित
करने में अपार कष्ट सहते
हुए भी जिन्होंने कभी हार नहीं मानी
ऐसे देवपुरुष को उनके
138 वें बलिदान दिवस पर शतशः नमन।

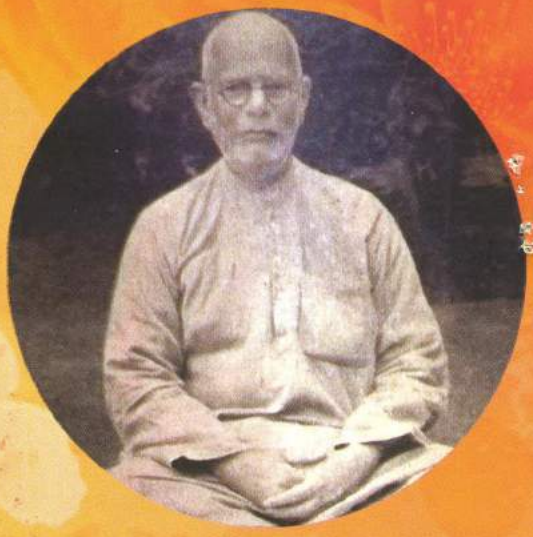

महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

मथुरा में 1925 में महर्षि दयानन्द
जन्मशताब्दी
के सफल संचालक

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :68 अंक : 2
अक्टूबर 2020 विक्रमाब्द 2077
दयानन्दाब्द 196 कलिसंवत् 5121
सृष्टिसंवत्-1, 96, 08, 53, 121

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	राम के अनुयायियों के लिए...	5
4.	देर से मिली नियति...	10
5.	संन्यास और त्याग	12
6.	ऋग्वेद संहिता को...	15
7.	ऋग्वेदसंहिता अथ द्वितीयोऽष्टक:	16
8.	आर्यसमाज के स्वर्णयुग...	18
9.	स्वामी अग्निवेश जी नहीं रहे	22
10.	गुरुकुल गौरव	23
11.	आयुष्मान् देवांश के...	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

न ह्यंग नृतो त्वदन्यं विन्दामि राधसे।
राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वणः।।

ऋक्० ८, २४, १२।।

विनय

हे नचाने वाले! हे इन सब चराचर सृष्टियों को कठपुतलियों की तरह हिलाने वाले! मैं तुम्हारी शरण पड़ा हूं। जब से मैंने अनुभव किया है कि इस गतिमय समस्त ब्रह्माण्ड को गति देने वाले तुम हो, इस संसार में होने वाले छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कर्मों को प्रेरित करने वाले तुम हो, तुम्हारी इच्छा के बिना इस संसार में तिनका भी नहीं हिल सकता है, तब से मैं तुम्हारी शरण में आ पड़ा हूं। मैं देखता हूं कि तुम्हारी कृपा बिना मैं कुछ नहीं पा सकता। इस संसार में तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं है जो मुझे कोई सिद्धि व सफलता दिला सके। मुझे कोई नहीं दिखायी देता जो मेरे छोटे से छोटे अभीष्ट की सिद्धि कर सके। मेरी जीवन साधना के तो एकमात्र तुम्हीं आधार हो! पर हे वाणियों से संभजनीय! मैं तो देखता हूं कि यदि मैं धन पाना चाहूं, तेज पाना चाहूं, बल पाना चाहूं या कुछ और पाना चाहूं, इन सब वस्तुओं को भी दे सकने वाला तुम्हारे सिवाय इस संसार में मेरे लिये और कोई नहीं है। तो मैं और किसका आश्रय लूं? मैं तो हे इन्द्र! तुम्हारी शरण में पड़ा हूं, सब जगह भटक-भटक कर अब तुम्हारी शरण पड़ा हूं।

शब्दार्थ

(अंग) हां, (नृतः) हे नचाने वाले! (राधसे) साधना सिद्धि व सफलता के लिये मैं (त्वत्) मुझ से (अन्यं) अन्य किसी को (न हि) नहीं (विन्दामि) पाता हूं, (गिर्वणः) हे वाणी से संभजनीय! (राये) धन के लिये (द्युम्नाय) तेज के लिये (च) और (शवसे) बल के लिये मैं और किसी को नहीं पाता हूं।

- ज्ञान का मान और लाभ तभी है जब उसे व्यवहार में लाया जाये।
- अज्ञान अंधेरे की भांति है, जंजीरों की भांति नहीं।
- एक पल का क्रोध पूरा जीवन बिगाड़ सकता है।

सम्पादकीय

ऋषि दयानन्द के बलिदान दिवस पर-

महर्षि दयानन्द के शब्दों में

भारत का सुधार कैसे हो?

महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवनकाल में ३७ वर्षों तक पूरे भारत का भ्रमण करके इस देश की दुर्दशा को प्रत्यक्ष देखकर उसके कारणों का विचार कर इस दुर्दशा को दूर करने के उपायों को अपनाने के लिए वाणी और लेखनी के द्वारा जनता को प्रेरित किया।

बालक देश के भविष्य की नींव होते हैं, अत: इनके सुधार का प्रथम उत्तरदायित्व माता पिता का है। तदनन्तर शिक्षक वर्ग तथा शासक वर्ग का यह कर्त्तव्य बनता है कि बालकों के जीवन में कोई अनीति नहीं आने पाये। इसलिये देश में जो व्यक्ति अनैतिकता का व्यवहार करते हैं उनको शासक लोग सुधारें। शिक्षक लोग ज्ञान देकर समझायें तथा सुधारने का प्रयत्न करें। इस पर भी यदि कोई न माने तो शासकवर्ग यथोचित दण्ड देकर सुधारें। इसके लिये ऋषि दयानन्द जी ने सन् १८७४ में कहा था-केवल शिक्षा वा केवल अत्यन्त दण्ड से सुधर नहीं सकते, किन्तु दोनों से मनुष्य सुधर सकते हैं।

लोगों के सुधार हेतु ऋषि जी लिखते हैं-

''मद्य, गांजा, अफीम और जितने नशे हैं, वे सब अभक्ष्य हैं, ये सब बुद्धि के नाश करने वाले हैं। इससे इनका ग्रहण कभी न करना चाहिये। .....मद्य, अफीम, गांजा, भांग इनके ऊपर चौगुना कर स्थापन होय तो अच्छी बात है क्योंकि नशादिकों का छूटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिल्कुल छूट जायें तो मनुष्यों का बड़ा भाग्य है, क्योंकि नशा से किसी का कुछ उपकार नहीं होता।.....चोर, डाकू, परस्त्रीगामी और जूआ के करने वाले, इनके ऊपर ऐसा दण्ड होना चाहिये कि जिसको देख वा सुन के सब लोगों को भय हो जाये और उन कामों को छोड़ दें, क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं, सब उनसे ही होते हैं।''

''आर्यावर्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा, इसके विना सुख के दिन कभी न आवेंगे।''

जनता को भ्रमित करने के लिये देश में अनेक सम्प्रदाय और पाखण्डों का प्रचलन हो रहा है इनके लिए ऋषि जी कहते हैं:-

''पाखण्डों के चलने में राजा और राज्य नष्ट हो जाते हैं, सो अत्यन्त प्रयत्नों से इन पाखण्डों का अंकुर मात्र भी रहने न पावे। जैसे कि आजकल आर्यावर्त देश में (साधुओं की) मण्डली की मण्डली फिरती हैं, लाखों पुरुषों ने विरक्तता धारण की है, यह मिथ्याजाल ही है। इन लाखों में कोई एक पुरुष विरक्तता के योग्य है और सब पाखण्ड में रत हैं, इनकी

राजा यथावत् परीक्षा करे। सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सब विद्याओं में निपुण और शान्त्यादिक गुण जिसमें होंय, उसको तो विरक्त ही रहने दें, इससे जितने विपरीत होंय, उनको यथायोग्य हल ग्रहणादिक कर्मों में लगा देवें। इस व्यवस्था को अवश्य करे, अन्यथा कभी सुख न होगा।

बड़े-बड़े मन्दिर, मठ, गांव, राज्य दुकानदारी करते हैं और नाम रखते हैं वैष्णव, आचारी, उदासी, निर्मले, गोसाईं। जटाजूट बने रहते हैं, तिलक, छाप माला ऊपर से धार रखते हैं और उनका हृदय वा व्यवहार हम लोग देखते हैं, विद्या का लेश नहीं। बात भी यथावत् कहना वा सुनना नहीं जानें। इससे सब मनुष्यों को एक सत्य, धर्म, विद्यादिक गुण ग्रहण करना चाहिये और इन दुष्ट व्यवहारों को छोड़ना चाहिए, तभी सब मनुष्यों का परस्पर उपकार हो सकता है, अन्यथा नहीं।

जब ब्रह्मचर्याश्रम, विद्या का प्रचार, धर्म से सब व्यवहारों का ग्रहण करें और वेश्या तथा परस्त्री गमनादिकों का त्याग करें तो देश के सुख की उन्नति हो सकती है। परन्तु जब तक पाषाणादिक मूर्तिपूजन, वैरागी, पुरोहित भट्टाचार्य और कथा कहने वालों के जाल से छूटें, तब उनका अच्छा हो सकता है, अन्यथा नहीं।

सत्यभाषणादिक का छोड़ना और पाषाणादिक मूर्ति का पूजन करना उचित नहीं। परन्तु इन सैकड़ों [संन्यासियों] में कोई एक धर्मात्मा और पण्डित हैं। अन्य जैसे गृहाश्रम में थे वैसे ही बने रहते हैं और कितने गृहस्थों से भी नीच कर्म करते हैं क्योंकि उन्होंने केवल खाने-पीने और विषयभोग हेतु विरक्त का वेष धारण कर लियां है, परन्तु विरक्तता उमें कुछ नहीं मालूम पड़ती, क्योंकि धर्म की रक्षा और मुक्ति करने के लिये वे विरक्तयों की भांति बन गए हैं। कोई धर्मात्मा शासक होय और इनकी यथावत् परीक्षा करे तो हजारों में एक विरक्तता के योग्य निकलेगा। क्योंकि जब पूर्ण विद्या, जितेन्द्रियता से युक्त हों, छल कपट आदि दोषरहित होवें, सत्य-सत्य उपदेश करें तथा सबके ऊपर कृपा करके वैराग्य ज्ञान और परमेश्वर का ध्यान करें तथा काम, कोध, लोभ, मोह आदि दोषों को छोड़े और सत्य धर्म, सत्य विद्या, सत्य उपदेश की सदा निष्ठा होने से विरक्तता होती है, अन्यथा नहीं।''

आजकल भारत में मन्दिर निर्माण की होड़ सी लगी हुई है। शिव, हुनमान्, शनैश्चर आदि के नाम से नये मन्दिरों पर भी प्राचीन मन्दिर नाम लिखा जा रहा है। ऐसे मन्दिरों में पहले जो हो रहा है और आगे भी होगा उसकी ओर भी ऋषि दयाननदजी संकेत कर रहे हैं:-

''शीतला अष्टमी को गधे की पूजा करते हैं और हनुमान् का रूप मान के वानर की पूजा करते हैं। भैरव का वाहन कुत्ता को मान के पूजते हैं। पाषाण, पीपल आदि पेड़, तुलसी आदि औषधि, दूब और कुश आदि घास, पीतल आदि धातु, चन्दनादि काष्ठ, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, जूता तक की आर्यावर्त देश वाले पूजा करते हैं। इनको सुख वा कल्याण कभी नहीं हो सकता। जब तक इन पाखण्डों

को आर्यावर्तवासी लोग न छोड़ेंगे, तबतक इनका अच्छा कुछ नहीं हो सकता।''

शालिग्राम पाषाण और तुलसी घास दोनों का विवाह करते हैं। तडाग ,कूप, बाग आदि का विवाह कराने लगे हैं और नाना प्रकार की मूर्तियां बना के मन्दिर में रखते हैं। उनके नाम शिव और पार्वती, नारायण और लक्ष्मी, दुर्गा, काली, भैरव, राधा और कृष्ण, सीता और राम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, गणेश, ऋद्धि-सिद्धि इत्यादि रख लिये हैं।

सब संसार से धन लेने के लिये उपदेश करते हैं कि आओ यजमान धन चढाओ देवताओं को, नहीं तो तुमको दर्शन का फल नहीं होगा। बाल भोग ले आओ, राजभोग के लिये देओ गहना तथा वस्त्र चढ़ाओ। नारायण तथा महादेव के लिए मन्दिर बनवाओ और सूब आजीविका लगवाओ।

हम कहते हैं कि ऐसे दरिद्र देवता और महन्त तथा पुजारी लोग आर्यावर्त के नाश के लिये कहां से आ गये और कौन-सा इस देश का अभाग्य और पाप था कि ऐसे-ऐसे पाखण्ड इस देश में चल गये। फिर इनको लज्जा भी नहीं आती कि अपने पुरुषों का उपहास करते हैं कि ये सीता राम हैं इत्यादि नाम लेके दर्शन कराते हैं। इसमें उपहास है, परन्तु समझते नहीं।

श्रीकृष्ण और राम आदि के जो सत्य भाषण आदि व्यवहार तथा राजनीति का यथावत् पालना और जितेन्द्रिय आदि, सब विद्याओं का पढ़ना इन सत्य व्यवहारों का आचरण तो कुछ नहीं करते, किन्तु केवल उपहास की बातों तथा पापों को अपनी कुगति के लिये प्रसिद्ध करते हैं।

अनपढ़ लोग आजकल साधु का वेष धारण करके जो कुछ करते हैं, उनके लिए ऋषि जी कहते हैं-

''बहुत ऐसे-ऐसे बालकों को और स्त्रियों को बहकाते हैं कि वे जन्म तक नहीं सुधर सकते। ऐसा कहते हैं कि वह माता-पिता तो झूठे हैं तुम आ जाओ नारायण के शरण। और एक -एक साधु हजार-हजार को मूड़ लेता है और बहका के पतित कर देते हैं। उनका मरण तक कुछ सुकर्म नहीं होता, क्योंकि सुधरे तो तब, जो कुछ विद्या पढे और बुद्धि हो। फिर एक घर को छोड़ देते हैं और माता पिता की सेवा भी छोड़ देते हैं। फिर कुटी, मठ और मंदिरों को बनाके हजारों प्रकार के जाल में फंस जाते हैं। उनसे पूछना चाहिये कि तुम लोगों ने घर और माता पितादिक क्यों छोड़े थे? तब वे कहते हैं कि ऐसा सुख घर में नहीं है। ठीक है कि घर में छप्पर के नीचे रहना पड़ता था। मजूरी मेहनत से चना और जौ का आटा भी पेटभर नहीं मिलता था। सो आर्यावर्त मे अन्धकारपूर्ण है। नित्य मोहनभोग मिलता है और नित्य नये भोग। ऐसा सुख स्त्री का भी गृहाश्रम में नहीं होता। इससे गृहाश्रम में कुछ है नहीं। देखिये कि एक रुपैया मन्दिर में

शेष अगले पृष्ठ पर

चढ़ाता है उसको एक आने का प्रसाद देते हैं

राम के अनुयायियों के लिए गहन चिन्तन का विषय

1. विदेशी आक्रमणकारी बाबर के सिपहसालार मीर जकी ने अयोध्या के राम जन्मभूमि मन्दिर का विध्वंस कर अपना नाम तो जन्नत केलिये रिजर्व कर लिया होगा शायद। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद बहुसंख्यक हिन्दू समाज का पांच शताब्दी तक चला संघर्ष भी सफल हो गया। मन्दिर निर्माण आरम्भ भी हो गया। समस्त देश से अपार धन सम्पत्ति भी श्रद्धालुओं द्वारा आ रही है, पर जिस समस्या पर सम्पूर्ण हिन्दू समाज का लेशमात्र भी ध्यान नहीं है और जो मन्दिर से भी अधिक विचारणीय, भविष्य के लिए सोचनीय तथा भयावह परिणाम लाने वाली है, उस पर न तो विश्व हिन्दू परिषद् , न राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ

भारत का सुधार कैसे..... पिछले पृष्ठ से आगे

और कभी नहीं भी देते हैं। परन्तु हम लोगों ने इसको विचार लिया है कि सोलह, पचास, सौ और हजार गुना तक भी लाभ इस मन्दिर की दुकानदारी में तथा तीर्थ में होता है। अन्यत्र कैसे ही दुकानदारी करो तो भी तो भी ऐसा लाभ नहीं होता। क्योंकि खाना, नित्य नई नई स्त्रियां और नित्य नाना प्रकार के पदार्थों की प्राप्ति अन्यत्र कहीं नहीं होती सिवाय मंदिर, पुराणादिकों की कथा और चेलों के मूड़ने से। इससे आप हजार कहो हम लोग इस आनन्द को कभी न छोड़ेंगे। परन्तु कभी दैवयोग से विद्या और बुद्धि आर्यावर्त में होगी, फिर तुमको और तम्हारे पाखण्डों को वे सेवक और यजमान ही छोड़ेंगे। तब पीछे झकमार के तुम लोग भी छोड़ देओगे।

ऐसा कानून शासक और प्रजा को चलाना और मानना चाहिये, जिससे द्यूत, चोरी, परस्त्रीगमन और मिथ्या साक्षी, बाल्यावस्था में विवाह और विद्या का लोप न होने पावे। फिर शासक और प्रजा उस कानून को धर्म मानें और उस पर ही सब चलें। परन्तु ऐसा वह कानून होवे जिससे यह लोक और परलोक दोनों शुद्ध होवें। वह कानून धर्म से कुछ भी विरुद्ध न होवे, क्योंकि धर्म नाम है न्याय का और न्याय नाम है पक्षपात का छोड़ना। उनका ज्ञान सब मनुष्यों को होना चाहिये। धर्म का रक्षक विद्या ही है क्योंकि विद्या से ही धर्म और अधर्म का बोध होता है। उनसे सब मनुष्यों को हिताहित का बोध होता है, अन्यथा नहीं।.....सर्वत्र धर्म व्यवहार में परमेश्वर की प्रार्थना सबको करनी उचित है, इसी से सब उत्तम लाभ मनुष्यों को होते हैं।''

प्रस्तुतकर्ता-**विरजानन्द दैवकरणि**
९४१६०५५७०२

और न ही देश के कोने कोने में स्थित प्रचुर धन एकत्र कर आलसी, अकर्मण्य जीवन बिता रहे मठाधीशों के पास एक क्षण का भी समय है।

2. वह गम्भीर समस्या क्या है? बताने की आवश्यकता तो है नहीं। फिर भी यदि विचार न करने वालों की आंखें खोल दें। वह समस्या है तीव्र गति से हिन्दुओं की घटती जनसंख्या अर्थात् राम के प्रति श्रद्धा रखने वालों का वर्ष प्रतिवर्ष सिमटता आंकडा चौंकाने वाला है। इस समस्या के कारण खोजने की आवश्यकता नहीं है। कारण तो हस्त आमलकवत् स्पष्ट, सभी को प्रत्यक्ष दीख रहे हैं।

3. अधिकांश हिंदू समाज ने समय की मांग को पहचाना, आत्मचिन्तन किया और परिवार नियोजन अपना कर अपने को दो बच्चों तक सीमित कर लिया। जागरूक तथा जिम्मेदार माता पिता ने अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास के क्षेत्र मे बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा संसाधनों की कमी को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना उचित समझा। दूसरी ओर अपने इसी देश में कुछ ऐसे लोग भी पर्याप्त संख्या में हैं जो यह सोचते हैं कि बच्चे तो भगवान् की देन हैं, खुदा की देन हैं और एक से अधिक पत्नियां रखने के धार्मिक आधार का तर्क देकर दर्जनों बच्चे पैदा करना अपना मौलिक आधार मान कर जनसंख्या में बेहिसाब वृद्धि करने का पाप कर रहे हैं। पाप क्यों? क्योंकि वे बच्चे शिक्षा, रोजगार, आवास आदि बुनियादी आवश्यकताओं के अभाव में अपराधी बनकर सरकार, समाज तथा अपने माता पिता के लिए एक गंभीर समस्या बन जाते हैं। ऐसे में आबादी सन्तुलन का पलड़ा तो उधर ही झुकेगा।

4. प्रजातन्त्रीय व्यवस्था में सरकार तो बहुमत से बनती है। बहुमत से बनी सरकार अपने वोटरों के हित में बाधा डालने वाले पुराने कानून खत्म करेगी उनके अनुकूल नए कानून बनायेगी, संविधान में संशोधन करेगी और आवश्यकता हुई तो पूर्णतया बदलकर रख देगी। यह डर सच्चा ही है कि आज का बहुसंख्यक समाज कल जब अल्पसंख्यक हो जायेगा तो उसका वही हाल होगा जो आज पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों का है। भारत कितने ही राज्यों में, कितने ही जिलों में हिन्दू पहले ही अल्पसंख्यक हो चुके हैं और जहां नहीं हुए हैं, वहां अगले कुछ वर्षों में होने वाले हैं। वहां हिन्दुओं के साथ क्या व्यवहार हो रहा है, इसके समाचार आये दिन पढ़ने को मिलते हैं। अपने हरियाणा का नूंह जिला (मेवात क्षेत्र) उनमें से एक है। इस पर गजब यह कि इन सभी क्षेत्रों में बहुमत में होने

के बाद भी उन्हें अल्पसंख्यकों को संविधान और कानून में प्रदत्त समस्त सुविधायें प्राप्त हैं और बेचारा वहां का अल्पसंख्यक, वास्तव में अल्पसंख्यक हिन्दू उनसे वंचित है। ऐसा अन्धा कानून संसार में किसी देश में है तो वह अपना नामभर का हिन्दुस्तान है।

5. एक अन्य बड़ा कारण है हिन्दू समाज में लड़कियों की तीव्र गति से घटती संख्या। अत्यन्त खेद का विषय है कि सीता, पार्वती, दुर्गा, सरस्वती, वैष्णो देवी, काली माता की पूजा करने वाला, नवरात्रों में कन्याएं जिमाने वाला, देवी की कड़ाही करने वाला हिन्दू अपनी गर्भस्थ कन्या को मार डालने का जघन्य पाप करने से जरा भी नहीं हिचकता। हम अपनी ही जड़ों पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं, उस मूर्ख की भांति हैं जो जिस डाली पर बैठा है उसे ही काट रहा है। अपने हरियाणा को ही लीजिये, महेन्द्रगढ़ और झज्जर जिले देशभर में बेटियों के मामले में सबसे पिछड़ रहे हैं। मोदी जी के 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान का कुछ प्रभाव दिखने तो लगा है, देखें कब तक ? कारण दहेज प्रथा। वहीं अपने हरियाणा का ही नूंह जिला (मेवात क्षेत्र) इस मामले में प्रथम क्यों ? उस समाज में दहेज नहीं, लड़कियों की मांग ज्यादा, एक से अधिक बीवियों की जरूरत इन्हें ही पूरी करनी है। आखिर आबादी बढाने का काम तो इन्हीं भावी माताओं को करना है।
– सरकार के भ्रूण हत्या कानून को धत्ता बताकर, लिंग परीक्षण का गर्भ में पता करने वाले झोला छाप डॉक्टरों ने स्थान स्थान पर एजेण्ट बना कर गर्भवती महिलाओं के पेट में पल रही बच्चियों को खत्म करने का पूरा बन्दोबस्त कर रखा है। यदि सौभाग्य से कोई बच गयी तो दहेज का फन्दा जवान होने पर उसकी प्रतीक्षा में बैठा है। समाज को अपनी सोच बदलनी होगी तभी कुछ ठोस परिणाम निकलेगा। सरकारी कानून लाचार है।

6. एक अन्य प्रभावी कारण है–हिन्दुओं का अपने वंचित, अशिक्षित, निर्धन वर्ग के प्रति उपेक्षा का भाव, संवदेनशीलता की कमी। ईसाई मिशनरियों ने विदेशों से प्राप्त असीम धनराशि, एन.जी.ओ. बनाकर शिक्षा के नाम पर, स्वास्थ्य के नाम पर अपनी भारत सरकार से प्रतिवर्ष अुनदान लेकर उसका दुरुपयोग धर्मान्तरण कर बिहार के आदिवासी भाइयों, असम मिजोरम, मणिपुर, अरुणाचल, नागालैण्ड, सिक्किम सब जगह अपना मत फैला रहे हैं। धर्मान्तरण शीघ्र ही बदल कर राष्ट्रान्तरण का रूप ले लेता है। नागालैण्ड तथा कश्मीर घाटी में राष्ट्रविरोधियों का येही उद्देश्य रहा है और हमारा हाल यह

है कि पाकिस्तान से विस्थापित, प्रताड़ित हिन्दू-सिखों को नागरिकता प्राप्ति के लिए वर्षों भटकना पड़ता है, धक्के खाने पड़ते हैं। इसी रक्षा बंधन के दिन राजस्थान के जोधपुर जिले के एक गांव की घटना रोंगटे खड़े कर देने वाली है। दो वर्ष पूर्व पाकिस्तान से विस्थापित होकर ग्यारह सदस्यों का एक हिन्दू परिवार किसी की कृषि भूमि किराये पर लेकर अपनी झोंपड़ी में जैसे तैसे गुजारा कर रहा था। जब सब तरह लाचार, बेबस कोई उपाय न सूझा तो सामूहिक आत्महत्या कर ली। किसी के रोंगटे खड़े नहीं हुए। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने राजस्थान सरकार से रिपोर्ट मांगकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली। राजस्थान की कांग्रेसी सरकार तो अपनी ही आग में झुलस रही थी। हाँ, अगर कोई अहिन्दू परिवार ऐसे मरता तो जयपुर तक आग जल उठती। कोई दो वर्ष पहले पांच हिन्दू परिवार जो पाकिस्तान ये आकर यहां इज्जत का जीवन बिताने की क्षीण आस लिये आये थे, उन्हें हमारी सरकार ने नागरिकता का डण्डा दिखाकर वापिस धकेल दिया। जाते ही मुल्लों ने उन्हें पक्का मुसलमान बनाया, आर्थिक सहायता दी। भई! जिन्दा तो ऐसी कौम ही रहेंगी।

7. अपने हिन्दू समाज में बाहर निकलने के अनेक दरवाजे रहे हैं और अब भी हैं। कोई भूला भटका सांझ हुए 'घर वापिसी' करे तो हम उसे स्वीकार नहीं करते। आर्यसमाज के शुद्धि आंदोलन की असफलता का एक कारण यह भी रहा। हरियाणा में हमारे भाई मूले जाट बिल्कुल हिन्दू हैं, हमारे गोत्र, बिरादरी के खून के रिश्ते के, पर हमने उन्हें अभी तक पूरी तरह नहीं अपनाया। उल्टे हरियाणा की भाजपा सरकार उनके लिये आरक्षण की व्यवस्था कर उनकी अलग पहचान को स्थायी तौर पर पक्का करने की गलती कर रही है।

8. हिन्दू मंदिरों में धन की कोई कमी नहीं। तिरुपति जैसे धनाढ्य मंदिरों पर सरकार की ललचाई दृष्टि ने एक नया कानून बनाकर उस धन पर सरकार का हक बना लिया। किसी गुरुद्वारे, गिरजाघर (चर्च), मस्जिद को छूने की हिम्मत किसी में नहीं हुई। केवल असंगठित, सोच में पिछड़े हिन्दुओं के दान का पैसा सरकार के खजाने में जायेगा। हां, मौलवियों को मासिक वेतन भी देना है, वह इसी से दिया जाता है। ऐसा अन्धा कानून केवल नाम के तथाकथित हिन्दुस्तान के सिवाय संसार के किसी देश में नहीं होगा। हमें चाहिए इस धन का अपने वंचित समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्धनता पर व्यय करें।

9. अन्य सम्प्रदायों की भांति महिलाओं के

प्रति भी हिन्दू समाज से भेदभाव का दोषी है। केरल के एक मंदिर में दस वर्ष से अधिक तथा पचास वर्ष से कम उम्र की महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध है। तक यह कि वे रजस्वला हो सकती हैं। तो क्या आसमान गिर गया या धरती फट गयी। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में, आयुर्वेद के आचार्यों ने मासिक धर्म को एक पूर्णतया स्वास्थ्य तथा सामान्य शारीरिक क्रिया बताया है:-

'भस्मना शुध्यते कांस्यं,
ताम्रमम्लेन शुद्ध्यते।
रजसा शुद्ध्यते नारी,
नदी वेगेन शुद्ध्यति।।'

-वृद्ध चाणक्य

कांसी की धातु राख से शुद्ध होती है, तांबा अम्ल (खट्टा) से शुद्ध होता है, नारी रज से शुद्ध होती है और नदी अपने से शुद्ध होती है।

और भी-

'स्त्रिमः पवित्रतामूलं नैता
दुष्यन्ति कर्हिचित्।
मासि मासि रजो यासां
दुष्कृतान्यपकर्षति।।'

स्त्रियां अत्यधिक पवित्र होती हैं, वे अपवित्र हो ही नहीं सकती। रज उनके दोषों को प्रतिमास दूर कर देता है।

-शार्ंगधर पद्धति (३०.८४)

इस भेद के विरुद्ध न्याय के लिए सर्वोच्च न्यायालय तक को अपना अमूल्य समय व्यर्थ ही नष्ट करना पड़ रहा है, पर दुराग्रही, परम्परावादी अन्ध श्रद्धालु हिन्दू सुधार के लिए तैयार नहीं।

10. क्यों भाई! कोई हमें समझाये कि जिस ईश्वर ने प्रकृति के माध्यम से सोना, चांदी, हीरे, मोती की रचना की, क्या वह इनका भूखा है? जब जब हमने मन्दिरों में अनावश्यक धन एकत्र किया, वह चोर, लुटेरों, डाकू तथा विदेशी आक्रमणकारियों के हाथ लगा। प्रतिदिन समाचार पत्रों में पढते हैं कि मन्दिर का दानपात्र, भगवान् का चाँदी का मुकुट चोर ले गये। जो मूर्ति बेचारी अपने सिर के मुकुट को एक अदने से चोर से नहीं बचा पाती, भला वो भक्त का क्या भला करेगी। वैसे भी नीतिशास्त्र कहता है-

'अधिक संग्रह मत कीजिये,
अधिक संग्रह दुखदाय।
कनक संग्रह चींटिन को,
ज्यो तीतर चुग जाय।।'

लाखों मधुमक्खियों का महीनों के परिश्रम से एकत्र शहद मिनटों में रीछ खा लेता है।

अत: हिन्दू मन्दिर अपना धन अपने समाज की भलाई के लिये व्यय करें, यही श्रेयस्कर है।

-मेजर रतनसिंह यादव (सेवानिवृत्त)
९०५०३४१००६

देर से मिली नियति की सही राह

-आर. विक्र

15 अगस्त, 1947 को जब 10 डाउन एक्सप्रेस लाहौर से अमृतसर पहुंची तो कोई उतरा नहीं। दरवाजे खोले गए तो डिब्बों की फर्श पर चीर दी गई लाशें ही लाशें थीं। खून से तरबरतर बोगियों से लाशें उतारी जा रही थी और रेडियो पर नेहरू के शपथग्रहण के भाषण नियति से मुलाकात की रिकार्डिंग का प्रसारण हो रहा था। यह हमारीआजादी का पहला दिन था। अभी ऐसी और भी ट्रेनें आनी थी। जब हम गुलामी में थे तब चीन जापान से युद्ध के बाद फिर से गृहयुद्ध में था और जापान, जर्मनी विश्वयुद्ध के ध्वंस के बाद हमारी जैसी स्थिति में थे। वे सब अपनी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में लग गए और हम समाजवाद, विश्वशांति, जातीय-भाषाई जागरण, यूनियनबाजी आदि में व्यस्त रहे। हमने राष्ट्र निर्माण का कोई ठोस अभियान नहीं चलाया। क्षेत्र-भाषावार राज्य बनाए। फिर कश्मीर में युद्धविराम, 370/35 ए के साथ कश्मीर की समस्या खड़ी की । नेहरू के 1950 में लियाकत पैक्ट ने भारत से प्रस्थान कर रह अल्पसंख्यकों को तो यहीं रोक लिया, लेकिन हिन्दओं-सिखों को पाकिस्तान में धर्मांतरण, अपहरण एवं हत्याओं का शिकार होने के लिए लावारिस छोड़ दिया। इसके बाद हमने चीन से 1962 की पराजय देखी। 1957 तक नेहरू को पता ही नहीं था हमारी सीमाएं कहां तक हैं? पाकिस्तान से हुई वार्ताओं में विवाद समाप्त करने के लिये हम जम्मू-कश्मीर में 1500 वर्गमील भूमि देने का मन बना रहे थे। यह तो संप्रभुता का हाल था।

युद्धों में सेनाओं ने बलिदान देकर जो भूमि अधिकार में ली, हमने तुष्टिकरण का स्तर ऊंचा उठाते हुए वापस कर दी। 1971 की महान् सैन्य विजय को हमने अर्थहीन बना दिया । जब देश सेक्युलर हुआ तो कॉमन सिविल कोड एक स्वाभाविक रास्ता था, लेकिन उस पर चलने से इन्कार किया गया। हमने अपनी राजनीतिक व्यवस्था ही ऐसी चुनी जिसमें 24 घंटे की राजनीति के अलावा और कुछ संभव ही नहीं था। क्षेत्र-जाति की राजनीति करने वाले अचानक अपने को गठबंधनों की सत्ता में शीर्ष पदों पर पाने लगे। आर्थिक मोर्चे पर हम एक स्थान पर खड़े कदमताल कर रहे थे। यूनियनबाजों ने कानपुर से लेकर बंगाल तक देश के औद्योगिक वातावरण को ध्वस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हमारी विकास दर को हिंदू रेट ऑफ ग्रोथ कहा गया। यह एक ऐसा दौर था जब प्रधानमंत्री तक बंधुआ होने लगे। जब नरसिंह राव प्रधानमंत्री हुए तब कहीं जाकर यह देश

उस दिशा में अभिमुख हुआ जिधर 1947 से ही चलना था। हमारे साथ चले जापान, जर्मनी आर्थिक महाशक्ति बन चुके थे। चीन भी तेजी से आगे जा रहा था। हम खानदानों को पकड़े बैठे थे। सूचनाक्रांति की समृद्धि के साथ बड़े-बड़े घोटाले भी आए। चीन हमारी सीमाओं में बढता रहा, हम दोस्ती का स्वांग किए रहे। आतंकवाद का भयानक दौर भी आया। हमारी नियति यह तो नहीं थी।

आंखें खुली तो हमारे सामने 1947 से चले आ रहे असंभव सपनों की एक शृंखला थी। सवाल थे कि अनुच्छेद 370, धारा 35 ए का खात्मा और पीओके की वापसी कभी हो पाएगी? हमारी अर्थव्यवस्था जैसे चीन की पूरक अर्थव्यवस्था होती जा रही थी। सरकारी खर्च बढाकर जीडीपी बढाई जा रही थी। बैंकों को बड़े ऋण देने के लिये बाध्य किया जा रहा था। परिवर्तन व्यग्र प्रतीक्षा के बीच बदलाव का दूसरा दौर 2014 से प्रारंभ हुआ। कर्मठता, जनसरोकार और समावेशी राष्ट्रवाद इस परिवर्तन की पहचान बने। समानांतर अर्थव्यवस्था और आर्थिक अपराध पर लगातार हमले जारी हैं। अनुच्छेद 370 और धारा 35 ए इतिहास हो गई। जम्मू-कश्मीर अब केन्द्र शासित प्रदेश है। नागरिकता विवाद समाप्त हुआ। वहां आतंकवाद अन्तिम सांसें गिन रहा है और जनप्रतिनिधियों की नई पौध आ रही है। पीओके का जो लक्ष्य कभी दूर था वह दिखना प्रारंभ हो गया है।

गुटनिरपेक्षता, राष्ट्रीय राजनीति में तुष्टीकरण, राज्यों में भाषा-जातिवादी आग्रह हमारा बेड़ा गर्क कर रहे थे। 2014 और फिर 2019 ने इसे बदल दिया है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृति सभ्यता का देश अपनी संस्कृति को लेकर एक अपराधी के समान क्षमाप्रार्थी हो रहा था। राष्ट्र संस्कृति की बात करने वाले नए अछूत बन गए थे। राममंदिर का निर्माण शताब्दियों की व्यग्रता की परिणति है। बात-बात पर अपने को एटॉमिक पावर बताने वाले पाकिस्तान की सर्जिकल और बालाकोट एयरस्ट्राइक के बाद जो हैसियत है वह अब किसी से छिपी नहीं है। सेनाओं की जरूरतें बड़ी तेजी से पूरी की जा रही हैं। पहली बार सैन्य रणनीति की महत्ता को स्वीकार करते हुए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जैसा पद सृजित किया गया है। बहुत कुछ हुआ है और बहुत कुछ होना बाकी है। हमें अब कॉमन सिविल कोड की दिशा में चलना है। राजनीति का जाति-संप्रदायवाद एक बड़ी समस्या है। राज्यों तक सीमित राष्ट्रीय सरोकारविहीन भाषा-जाति आधरित परिवारवादी दल दूसरी बड़ी समस्या है। समग्र राष्ट्र की सोच जब उनके संविधान में ही नहीं है तो गठबंधन के केन्द्रीय दायित्वों में वे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के

अतिरिक्त और क्या करेंगे? ये क्षत्रप राष्ट्रीय राजनीति को स्वहित के रिमोट से चलाते हैं। इनसे मुक्ति राष्ट्रपतीय लोकतंत्र के माध्यम से ही संभव है। पिछले दो चुनावों की नजीर हमारे सामने है। देश ने स्थानीय उम्मीदवारों को तो वोट ही नहीं दिया, बल्कि मोदी को राष्ट्रपति के प्रत्याशी की तरह देखा। संसदीय लोकतंत्र राष्ट्रीय नेतृत्व की अपेक्षा नहीं करता। राष्ट्रपतीय प्रणाली चौबीसों घंटे की विभाजनकारी राजनीति के बजाय देश को जोड़ने वाली व्यवस्था साबित होगी, जबकि संसदीय प्रणाली प्रायः गठबंधन आधारित हो जाती है। सीधे जनता से पांच वर्ष के लिए चयनित राष्ट्रपति किसी का बंधुआ और क्षत्रपों से नियंत्रित नहीं होगा।

एक बात और। आजादी से पहले चलाए गए सामाजिक कार्य से आजादी के भूले हुए अभियानों को अपनी पूर्णतया पर पहुंचना है। इसी तरह हमार धन और जनशक्ति का राष्ट्रनिर्माण में सदुपयोग होना है। इतने 15 अगस्त बीत गये। अब हम अपनी नियति की राह पर आए हैं। इस पर कायम रहना होगा। हमारी उम्मीदों को पंख लग जाना बहुत स्वाभाविक है, लेकिन उम्मीदों को पूरा करने में हमें भी हाथ बंटाना होगा।

(लेखक पूर्व सैनिक एवं पूर्व प्रशासक हैं)

संन्यास और त्याग

-स्वामी श्रद्धानन्द

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासंकवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।।

-गीता १३।२

शब्दार्थ-(कवयः) क्रान्तदर्शी, दीर्घदर्शी लोग (काम्त्यानां) फल भोगने की कामना से किये जाने वाले (कर्मणां न्यासम्) कर्मों के त्याग को (संन्यासं विदुः) संन्यास कहते हैं और (विचक्षणाः) विचारशील और आचार युक्त विद्वान् (सर्वकर्मफलत्यागम्) सब काम्य कर्मों के फल त्याग को (त्यागं प्राहुः) यथार्थ त्याग कहते हैं।

संन्यास कैसा कठिन उच्च पद है और वैराग्य कैसा शुद्ध मार्ग है। 'न लिङ्गं धर्मकारणम्' गेरुवे वस्त्र पहनकर कोई भी मनुष्य संन्यासी नही बन सकता। जिसका मन दृढ़ नहीं, जिसने लगातार अभ्यास से आज्ञा पालन के नियम नहीं सीखे और जिसने किसी तरह कवायद करके शस्त्र संचालन नहीं सीखा, वह अगर सैनिक भेष पहन भी ले तो युद्ध भूमि में क्या करेगा? इसी तरह जिस मनुष्य ने निरंतर साधनों द्वारा अपनी इन्द्रियों और मन को आत्मा का दास नहीं बनाया, जिसने यम नियमों के पालन द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि के मुकाबले के लिए धैर्य, क्षमा आदि के शस्त्र धारण नहीं किये,

उसने अगर गेरुवे वस्त्र धारण कर भी लिये हैं तो उसे संन्सासी कौन दीर्घदर्शी कहेगा। संन्यास का बड़ा ऊंचा पद है। जिस प्रकार ऊँची चोटी पर उसका मंदिर है इसी प्रकार उसे प्राप्त करना कठिन है। भारतवर्ष में इस समय लाखों भगवे वस्त्रधारी घूम रहे हैं। एक एक के आसन के पास सैकड़ों हजारों स्त्री-पुरुष श्रद्धा और अश्रद्धा से बैठे हुए हैं। अगर सचमुच ये संन्यासी होते, यदि इनमें से एक चौथाई भी संन्यास पद के अध्किारी होते तो क्या भारतवर्ष में इसी प्रकार हाहाकार मचा रहता?

संन्यास न केवल यही है कि फल भोग की इच्छा को छोड़ देना है परन्तु ऐसे कर्मों को भी न करना जिनका निश्चित परिणाम कुछ न कुछ जरूर होने वाला हो। सकाम कर्मों से सर्वथा त्याग एक पुरुष को त्याग की पहली सीढी पर पहुंचा सकता है। परन्तु निष्काम कर्म किस तरह करने चाहियें, यह बड़ा टेढा प्रश्न है । अनेक कर्म फल भोग की इच्छा से किये जाते हैं। राजा अश्वमेघयज्ञ प्रजा के पालन के निमित्त करता है, ताकि प्रजा सन्तुष्ट होकर राज्य की उन्नति करे। राज्य प्रबन्ध के लिये राज्य कोष को भर देवे। धार्मिक गृहस्थ पुरुष, पुत्रेष्टि इसलिये करता है कि उसके पुत्र उत्पन्न होकर उसे आनन्दित करें। संसार में यह सब कर्म, फल भोग की इच्छा से किये जाते हैं, उनका त्याग बड़े परिश्रम और आत्मदृढता से हो सकता है। पर कृष्ण भगवान् इसको त्याग की अन्तिम सीढ़ी नहीं कहते। उनकी सम्मति में अब तक जिज्ञासु के लिये और साधन शेष रह जाते हैं। सकाम कर्म को त्याग करके संन्यास का अभिलाषी, निष्काम कर्म आरंभ करता है और समझता है कि अब मार्ग पूरा कर लिया। परन्तु नहीं। निष्काम कर्मों का कोई विशेष फल न हो, यह बात नहीं है। संध्या से पुत्र, धन आदि की प्राप्ति चाहे न हो, किन्तु क्या इसमें संदेह है कि प्रीतिपूर्वक नित्य संध्या करने से मनुष्य की विशेष शान्त अवस्था हो जाती है। इसी प्रकार दीन, अपाहिजों की सहायता करने से, निर्बलों का उपकार करने से, चाहे दीन, अपाहिज और निर्बल पुरुष ऐसे परोपकारी का प्रत्युपकार न कर सकें, एक उपकारी पुरुष को विशेष आनन्द धर्म के काम करने से प्राप्त होता है। कृष्ण भगवान् कहते हैं सर्व निष्काम कर्मों से जो साधारण अवस्था भी जीवात्मा की स्वयमेव हो सकती है, यदि मनुष्य उसका जरा सा ध्यान भी बीच में रखकर उस काम को करता है, वह सच्चा त्यागी नहीं है।

यह ऊंचा आदर्श है। आज का कौन मनुष्य इसे पूरा कर सकता है, आजकल लोग यश के लिये परोपकर के कामों में लगे हुए हैं, उनको अनुकरणीय समझा जाता है। मैं मानता हूं कि जो मनुष्य यश के लिये ही काम करता है वह भी संसार का भला करता है और इसलिये उन

मनुष्यों से बहुत अच्छा है जिनकी रुचि परोपकार की ओर बिल्कुल नहीं है। परन्तु इस तरह की प्रसिद्धि का अभिलाषी पुरुष सैकड़ों और भाइयों को कुमार्ग की तरफ नहीं धकेलता। इसलिये न केवल यही कि मनुष्य निष्काम कर्म करे बल्कि उस निष्काम कर्म के स्वाभाविक परिणाम की भी बिल्कुल उपेक्षा कर दे तब वह संन्यास पद का अधिकारी होता है। इसका स्पष्ट अभिप्राय क्या है? प्रत्येक आर्य प्रातःकाल सन्ध्या करता है, उस समय न केवल उसका यह भाव होना चाहिये कि वह उसके बदले सांसारिक इच्छा न रखे किन्तु यह भी वह विचार करे कि संध्या करने से मुक्ति मिल सकेगी। अग्निहोत्र करते हुए, महापुरुषों की सेवा करते हुए, अतिथियों के आदर सत्कार के समय, दीन अपाहिजों को अपनी कमाई में से भाग देते समय, मनुष्य को जरा भी यह विचार मन में न लाना चाहिये कि उसकी बाबत आम लोगों की क्या सम्मति होगी, या उसके बदले में परमात्मा, कब उसे अपने समीप बुलायेंगे। यह कर्तव्य का ख्याल, जो आर्य महान् पुरुषों ने अपना मार्गदर्शक बनाया हुआ था, यदि एक कर्म के आरम्भ करने से पहले लाभ, हानि का बही खाता खोलकर हम बैठ जावें तो संसार के बड़े-बड़े दुःख कैसे दूर हो सकेंगे? यदि इस बही खाते को खोलकर शंकर और दयानन्द काम करते तो क्या वे अपने पुरुषार्थ से इस संसार को पलटा दे जाते? कभी नहीं। संभवतः प्रश्न होगा। हमें क्या? जिसे संन्यासी बनना हो वह ये कठिनाइयां सहे।

आह! प्यारे भाइयो! हम कैसी अविद्या के अंधकार में डूबे हए हैं। क्या संन्यासी बनने की इच्छा करना या न करना तुम्हारे वश में है? कदाचित् मत भूलो हर एक जीवात्मा जो मनुष्य शरीर धारण करके जन्म लेता है अपने साथ एक कर्तव्य लाता है और कुछ नियमों की जंजीरों में जकड़ा हुआ जाता है.....। गति संसार का नियम है। अगर तुम अपने कर्तव्य का दृढता से पालन नहीं करते और उनके सहारे से ऊपर को नहीं चलते तो गति तुम्हें नीचे की ओर ले चलेगी। तुम नहीं कह सकते कि हम संन्यासी नहीं बनना चाहते। तुम्हारा कर्तव्य है तुम संन्यासी बनो। एक तरफ ऊँचा पर्वत, दूसरी ओर भी ऊँचा पर्वत, बीच में बारीक किन्तु पक्का तार लग रहा है। तुम बीच के भाग में खड़े हो अगर हिम्मत से तार को दृढता से पग रखते हुए आगे न चलोगे, तो आंधी तुम्हें तुम्हारी जगह पर नहीं ठहरने देगी और जब एक बार पहाड़ के ऊपर की ओर से दृष्टि नीचे डालोगे तो विवशता से तार से जुदा हो जाओगे और फिर अथाह जल में गिरोगे जिसका आर पार तुम्हें नजर नहीं आता। सोचो, समझो! और संन्यास की तरफ पग उठाओ क्योंकि यही तुम्हारा इष्ट है।

ऋग्वेद संहिता को भ्रष्ट किया जा रहा है

भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेद है। इसके मूलपाठ की रक्षा के लिये दक्षिण भारत के सैकड़ों ब्राह्मण परिवार हजारों वर्षों से परम्परागत रूप से धर्म मानकर स्मरण करते आ रहे हैं। वेद के मूलपाठ का सुरक्षित करने के लिये जटा, माला, घन आदि आठ प्रकार के पाठों का भी आविष्कार किया गया है। इसके परिणामस्वरूप वेद के मूलपाठ में अभी तक कोई अन्तर नहीं हुआ है। अंग्रेज लोगों ने यद्यपि वेद के भाष्य के नाम से अनर्थ का ही प्रचार किया था, परन्तु वेद के मूलपाठ को विकृत करने की उन्होंने भी कोई चेष्टा नहीं की।

आज भिवानी (हरियाणा) में शिव नारायण शास्त्री (9416977399) नामक एक तथाकथित ब्राह्मण ऐसा है जो ऋग्वेद के मन्त्रों में अनधिकार चेष्टा करके उनको विकृत करने लग रहा है। इसके कार्य को देखने पर पता चला कि केवल 85 मन्त्रों में ही 160 पाठ अपनी ओर से जोड़ रक्खे हैं। पूरे ऋग्वेद के दस हजार मन्त्रों में कितने शब्द--अक्षर जोड़कर अनर्थ करेगा, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। मन्त्रों के साथ उनके छन्द तथा उदात्तानुदात आदि स्वरों को भी परिवर्तित कर रहा है। मन्त्र में जो छन्द हैं, से न जानकर अपनी ओर से छन्द का गलत नाम देकर छाप रहा है।

यह घोर अनर्थकारी पापकृत्य है। वेद के भक्तों, विद्वानों और श्रद्धालुओं को चाहिये कि इस व्यक्ति को रोका जाये। नहीं तो वेदविरोधी सम्प्रदाय वालों को एक ऐसा शस्त्र हाथ लग जायेगा जिसका प्रयोग वे वेदभक्तों को कठघरे में खड़ा कर सकते हैं। यद्यपि वेद का सही मूलपाठ इंटरनेट तक भी उपलब्ध है, परन्तु कुचेष्टा करने वाला अपना दुष्प्रभाव कुछ तो छोड़ ही सकता है। उदाहरण के लिये ऋग्वेद के कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रथम कालम में शिवनारायण शास्त्री द्वारा तैयार की जा रही ऋग्वेदसंहिता के मन्त्रों में जहाँ-जहाँ विकृत पाठ है उनको काले अक्षरों (बोल्ड) में करके दिखाया गया है। विकृत पाठ की उसी लाईन के सामने दूसरे कालम में ऋग्वेदसंहित (वेदभाषयम् तृतीय भाग, पंचमावृत्ति १००८, वैदिक पुस्तकालय अजमेर) का शुद्ध पाठ दिखाया गया है।

-आचार्य विरजानन्द दैवकरणि
९४१६०५५७०२

शिवनारायण शास्त्री, भिवानी, ९४१६९-७७३९९

ऋग्वेदसंहिता

अथ द्वितीयोऽष्टकः

अध्यायाः ८ (९-१६), सूक्तानि ११९ (१२२-२४०), वर्गाः २२१ (२६१-४८१)
मन्त्राः ११४७ (१३७१-२५१७)। मण्डल-क्रमे सूक्तानि १.१२२-३.६॥

अथ प्रथमोऽध्यायः

तत्र सूक्तानि १५ (१२२-१३६), वर्गाः २६ (आदितः २६१-२८६)। मन्त्राः १३७ (१३७१-१५०७)। म० १.१२२-१३६॥

तत्र सूक्तम् १, वर्गा १-३, मन्त्राः १५। ऋषिः २०.७ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।
विषयः विश्वे देवाः। छन्दः त्रिष्टुप् (११×४=४४) ५-६ विराड्रूपा (११×३+८=४१)।

मण्डलम् १, सूक्तम् १२२।

१.१ प्र वः पान्तं रघुमन्यवो **अन्धो**, यज्ञं रुद्राय मीळ्हुषे भरध्वम्।
दिवो अस्तोष्यसुरस्य वीरैरिषुध्येव मरुतो रोदस्योः॥ १

.२ पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या, उषासानक्ता पुरुधा विदाने।
स्तरीर्न **अत्कं विर्युतं** वसाना, सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः॥ २

.४ उत त्या मे यशसा श्वेतनायै, **वियन्ता पान्ता औशिजो** हुवध्यै।
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं, प्र मातरा रास्पिनस्य आयोः॥ ४

२.१ श्रुतं मे मित्रावरुणा **हवेमा, उत** श्रुतं सदने विश्वतः सीम्।
श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः, सुक्षेत्रा सिन्धुरद्भिः॥ ६

.४ जनो यो मित्रावरुणावभि**ध्रुतिगपो** न वां सुनोत्यक्ष्णयाध्रुक्।
स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त, आप यदीं होत्राभिर्ऋतावा॥ ९

.४ हिरण्यकर्णं मणिग्रीवमर्णस्, तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः।
अर्यो गिरः सद्य आ **जग्मुषीरा, उस्राश्चाकन्तु** उभयेष्वस्मे॥ १४

.५ चत्वारो मा मशर्शारस्य शिश्वस्, त्रयो राज्ञ आयवसस्य जिष्णोः।
रथो वां मित्रावरुणा दीर्घाप्साः, स्यूमगभस्ति सूरो न **अद्यौत्**॥ १५

सूक्तम् २, वर्गाः ४-६, मन्त्राः १३। ऋषिः २०.८ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।
विषय उषाः। छन्दः त्रिष्टुप् (११×४=४४)। म० १.१२३।

४.१ पृथू रथो दक्षिणाया **अयो जियैनं** देवासो अमृतासो अस्थुः।
कृष्णादुदस्था**दुरिया** विहायाश्, चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय॥ १

.२ पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि, जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री।
उच्चा **विर्यख्य**द्युवतिः पुनर्भूरोषा, अगन्प्रथमा पूर्वहूतौ॥ २

.३ यदद्य भागं विभजासि नृभ्य, उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते।
देवो नो अत्र सविता दमूना, अनागसो वोचति **सूरियाय**॥ ३

.४ गृहंगृहमहना **यातियच्छा**, दिवेदिवे अधि नामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागा दग्रमग्रमिद्भजते वसूनाम्॥ ४

५.१ उदीरतां सूनृता उत्पुरन्धी रुदग्नयः शुशुचानासो अस्थुः।
स्पार्हा वसूनि तमसापगूळ्हा **विष्कृणुवन्तियुषसो** विभातीः॥ ६

ऋग्वेदसंहिता

का शुद्ध पाठ

अथ प्रथमोऽध्यायः

वैदिक पुस्तकालय संस्करण
ऋग्वेदभाष्यम्,पंचमावृत्ति, २००८

रघुमन्यवोऽन्धो १.१२२.१

स्तरीर्नात्कं व्युतं १.१२२.२
व्यन्ता पान्तौशिजो १.१२२.४

हवेमोत श्रुतं १.१२२.६

मित्रावरुणावभि**ध्रुगपो** १.१२२.९

जग्मुषीरोस्राश्चाकन्तु १.१२२.१४

नाद्यौत् १.१२२.१५

अयोज्यैनं १.१२३.१
कृष्णादुदस्थादर्या३ १.१२३.१

व्यख्यद्युवतिः १.१२३.२

सूर्याय १.१२३.३
यात्यच्छा १.१२३.४

विष्कृण्वन्त्युषसो १.१२३.६

.३ सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो, दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम।	
अनवद्यास्त्रिंशतं योजनानि येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः॥ ८	योजनान्येकैका १.१२३.८
.४ **जानतियह्नः** प्रथमस्य नाम, शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची।	जानत्यह्नः १.१२३.९
ऋतस्य योषा न मिनाति धाम, अहरहर्निष्कृतमाचरन्ती॥ ९	
.५ **कनियेव तनुवा** शाशदानाँ, एषि देवि देवमियक्षमाणम्।	कन्यैव तन्वा३ १.१२३.१०
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती॥ १०	
६.१ सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा, **आविस्तनुवं** कृणुषे दृशे कम्।	योषाविस्तन्वं १.१२३.११
भद्रा त्वमुषो वितरं **वियुच्छ,** न तत्ते अन्या उषसो नशन्त॥ ११	व्युच्छ १.१२३.११
.२ अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा, यतमाना रश्मिभिः **सूरिस्य।**	सूर्यस्य १.१२३.१२
परा च यन्ति पुनरा च यन्ति, भद्रा नाम वहमाना उषासः॥ १२	
.३ ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना, भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि।	
उषो नो अद्य सुहवा **वियुच्छा, अस्मासु** रायो मघवत्सु च स्युः॥ १३	व्युच्छास्मासु १.१२३.१३
सूक्तम् ३, वर्गाः ७-९, मन्त्राः १३। ऋषिः २०.९ कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।	
विषयः उषाः। छन्दः त्रिष्टुप् (४४)। **म० १.१२४।**	
७.१ उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना, उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत्।	
देवो नो अत्र सविता **नुवर्थं,** प्रासावीद् द्विपत् प्र चतुष्पदित्यै॥ १	न्वर्थं १.१२४.१
.२ अमिनती **दैवियानि** व्रतानि, प्रमिनती **मनुषिया** युगानि।	दैव्यानि -----मनुष्या १.१२४.२
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा **वियद्यौत्**॥ २	व्यद्यौत् १.१२४.२
.३ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि, ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात्।	
ऋतस्य **पन्थामनु** वेति साधु, प्रजानतीव न दिशो मिनाति॥ ३	पन्थामन्वेति १.१२४.३
.५ पूर्वे अर्धे रजसो **अप्तियस्य,** गवां **जनित्रियकृत** प्र केतुम्।	अप्त्यस्य ------जनित्र्यकृत
वियु प्रथते वितरं वरीय, ओभा पृणन्ती **पितरोरुपस्था**॥ ५	व्यु ------पित्रोरुपस्था १.१२४.५
८.१ एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं, नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम्।	
अरेपसा **तनुवा** शाशदाना, नार्भादीषते न महो विभाती॥ ६	तन्वा३ १.१२४.६
.३ स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिमारै **गपैतियस्याः प्रतिचक्षियेव।**	गपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्यैव १.१२४.८
वियुच्छन्ती रश्मिभिः **सूरियस्य, अञ्जियङ्क्ते** समनगाइव व्राः॥ ८	सूर्यस्याञ्ज्यङ्क्ते १.१२४.८
.४ आसां पूर्वासामहसु स्वसॄणामपरा **पूर्वामभियेति** पश्चात्।	पूर्वामभ्येति १.१२४.९
ताः प्रत्नवन्नव्यसीर्नूनमस्मे, रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः॥ ९	
.५ प्र बोधयोषः पृणतो **मघोनि** यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु।	मघोन्यबुध्यमानाः १.१२४.१०
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि, रेवत् स्तोत्रे सूनृते जारयन्ती॥ १०	
.२ उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्, नरश्च ये पितुभाजो **वियुष्टौ।**	व्युष्टौ १.१२४.१२
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे **मर्तियाय**॥ १२	मर्त्याय १.१२४.१२
.३ **अस्तोढुवं स्तोभिया** ब्रह्मणा **मे, अवी**वृधध्वमुशतीरुषासः।	अस्तोढ्वं स्तोभ्या ---मे ऽवी १.१२४.१३
युष्माकं देवीरवसा सनेम, सहस्रिणं च शतिनं च वाजम्॥ १३	
सूक्तम् ४, वर्गाः १०, मन्त्राः ७, ऋषिः २०.१० कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।	
विषयो दानम्। छन्दः त्रिष्टुप् (४४), ४-५ जगत्यौ (१२×४=४८)। **म० १.१२५।**	
.२ सुगुरसत् सुहिरण्यः **सुवश्वो,** बृहदस्मै वय इन्द्रो दधाति।	स्वश्वो १.१२५.२
यस्त्वायन्तं वसुना प्रातरित्वो, मुक्षीजयेव पदिमुत्सिनाति॥ २	

आर्यसमाज के स्वर्णयुग की एक झलक

(महात्मा नारायण स्वामी जी के आत्मचरित से)

प्रस्तुति-**आनन्ददेव शास्त्री,** पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली सरकार

मथुरा शताब्दी का कार्यभार सम्भालते ही मुझे अनेक चिन्ताओं ने आकर घेर लिया कि किस प्रकार शताब्दी महोत्सव को सफल बनाया जा सकता है। आर्यसमाज के इतिहास में यह उत्सव अपनी तरह का पहला ही था। इसलिये इसकी सफलता के लिये आवश्यक था कि भरसक पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाय। सन् १९२३ के अन्त में इस कार्य को मैंने अपने जिम्मे लिया था। उसी समय से कुछ काम चलाने के लिये कुछ धन एकत्र करने का यत्न किया गया। क्योंकि मुझे चार्ज में काम करने के लिये कुछ धन मिलने के स्थान पर, मिला था चार रुपये,दस आने का ऋण चुकाना। प्रसन्नता की बात है कि धन के लिये जो अपील की गई थी, उसका अच्छा और संतोषजनक उत्तर मिलना प्रारम्भ हो गया। राजाधिराज सर नाहरसिंह जी शाहपुराधीश ने पांच हजार रुपये देने का वचन दिया। और भी आर्यसमाजी सम्पन्न आर्यों ने जी खोलकर सहायता देनी शुरू की। मथुरा में उत्सव होना था। मथुरा जंक्शन स्टेशन के पास विस्तृत भूमि उत्सव-मण्डप बनाने और आर्यनगर बसाने के लिये ली गई। इन सब कार्यों के लिये मथुरा रहना आवश्यक था,इसलिये सन् १९२३ ई. के अन्त में गुरुकुल वृन्दावन को शताब्दी सभा का हैडक्वार्टर बनाया गया और वहीं से आवश्यक पत्रिकायें जारी की गई। मुझे इस बात के प्रकट करने में बड़ी प्रसन्नता होती है, कि आर्यसमाज से बाहर की दुनिया ने भी उत्सव की सफलता में पूरा-पूरा सहयोग दिया।

१. गवर्नमेंट आफ इण्डिया ने उत्सव में सम्मिलित होने वाले राजकर्मचारियों को एक सप्ताह की छुट्टी देने का वचन दिया। इसी प्रकार समस्त प्रान्तीय सरकारों और देशी रजवाड़ों ने भी उत्सव में सम्मिलित होने वालों को छुट्टी देना स्वीकार किया।
२. रेलों में स्पेशल ट्रेन चलाने का उदारता से प्रबन्ध किया।
३. छोटी रेल वालों ने शताब्दी कैम्प के निकट ट्रेनों को खड़ी करने का प्रबन्ध किया।
४. मथुरा निवासी नागरिकों और विशेषकर वहां के चतुर्वेदी (चौबे) महानुभावों ने गगर-कीत्रन में लोगों को अपने हाथों से जल पिलाने, अपनी भूमि शताब्दी सभा को देने तथा अन्य सभी प्रकार की सहायता जो वे दे सकते थे, उसको देने में थोड़ा सा-भी संकोच नहीं किया।
५. पोस्ट आफिस विभाग ने प्रथम श्रेणी का डाकखाना और तारघर आर्यनगर में खोल दिया।
६. जिले के सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और पुलिस का पूरा-पूरा सहयोग हमें प्राप्त था। मथुरा के म्युनिसिपल बोर्ड ने रोशनी और पानी मुफ्त देने का प्रबन्ध कर दिया था।

उत्सव का समय

शताब्दी उत्सव मेला 15 से 21 फवरी 1925 ई. तक होने वाला था, परन्तु,फरवरी के प्रारम्भ होने से पहले ही दूर-दूर से लोगों का आना जाना शुरू हो गया था।

शताब्दी के लिये आर्यजनता में उत्साह

शताब्दी कार्यालय का चार्ज रखने, मेले का स्थानीय प्रबन्ध करने के सिवाय मुझे बाहर भी अनेक स्थानों पर जाना पड़ता था। मैं जहां जाता था, शताब्दी के लिये आर्यजनता में अपूर्व उत्साह देखकर चित्त प्रसन्न हो उठता था। आर्यसमाज लाहौर के उत्सव में सम्मिलित होकर मैंने देखा कि वहां दोनों पार्टियों (गुरुकुल और कालेज) ने चार दिन उत्सव इकट्ठे मनाए थे। आर्यसमाज शिमला के उत्सव में सम्मिलित होने से इसलिये बड़ी प्रसन्नता हुई कि वहां के कुछ प्रतिष्ठित पुरुष शताब्दी के लिये लगन से काम करते थे। राय साहिब गंगाराम उनमें मुख्य थे। इसी प्रकार कलकत्ता, बम्बई, लखनऊ, आगरा, अजमेर, काशी और प्रयाग (इलाहाबाद) सभी जगह उत्साह ही उत्साह दिखाई देता था।

शताब्दी के मेले का प्रबन्ध और शताब्दी मेला

शताब्दी के मेले के कैम्प प्रान्तवार बनाए गए थे। देश से बाहर के लोगों के लिए पृथक् पृथक् कैम्प थे। उत्सव में जापान, चीन,बर्मा अफ्रीका, मारिशस, मेडागास्कर, वेस्टउंडीज, जावा, सुमात्रा, फिलिपाईन और अमेरिका के लोग भी सम्मिलित हुए थे। कैम्प का प्रबन्ध प्रान्तवार था और सबका प्रबन्धकर्ता एक था। स्वयं सेवक बड़ी संख्या में वर्दी के साथ प्रत्येक प्रबन्धकर्ता के आधीन प्रत्येक कैम्प में पृथक्-पृथक् नियुक्त थे। बाजार में लगभग 500 दुकानें, प्रत्येक आवश्यक वस्तुओं की थी। मण्डप अत्यन्त विस्तृत था। मेले की सफाई का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। स्त्रियां शायद इतनी स्वतंत्रता के साथ, बेखटके किसी भी मेले में नहीं घूम सकती थी, जितनी स्वतन्त्रता उन्हें इस मेले में थी। बच्चा या औरत अपने कैम्प से पृथक् हो जाने अथवा रास्ता भूल जाने पर स्वयंसेवकों और आर्यनगर निवासियों द्वारा तत्काल अपने-अपने कैम्प में पहुंचा दी जाती थी। मेले में कितने लोग सम्मिलित हुए थे,इ सका अनुमान केवल रेल के टिकटों द्वारा किया जा सकता है। बड़ी लाईन के स्टेशन (मथुरा जंक्शन) में एक लाख तिरानवे हजार (193000) और छोटी लाईन के स्टेशन पर इकसठ हजार (61000) टिकट, मेले के यात्रियों से संग्रह किये गये थे।

रेल के सिवा जो यात्री मोटर, लारियों, इक्कों और तांगों पर आए थे, उनकी संख्या इनसे पृथक् हैं। ग्राम के बहुत से लोग अपनी-अपनी बैलगाड़ियों पर आए थे, उनकी इतनी अधिक संख्या थी कि उनका एक गाड़ी कैम्प यू.पी. कैम्प के सामने पृथक् बनाना पड़ा था। बहुत से यात्री साधारण यात्रियों की तरह आकर शहर में ठहरे थे। बहुत से निकट के रहने वाले पैदल आये थे। इन सबका जोड़ संकोच के साथ किया जाय तो पचास हजार से कम न होगा। इस प्रकार दो लाख चौवन हजार रेलों द्वारा और पचास हजार ये, कुल तीन लाख से अधिक होते हैं। जो बाहर से आकर मेले में सम्मिलित हुए थे । शहर से सम्मिलित होने वाले इनसे पृथक् थे।

इतना बड़ा धार्मिक मेला, विशेषज्ञों का कहना था कि हजारों वर्षों के बाद हुआ है। शायद महाराजा अशोक के समय इतने बड़े धार्मिक मेले हुए हों तो हुए हों।

उत्सव में पुलिस का कोई प्रबन्ध नहीं था। सारा उत्सव और मेले का प्रबन्ध आर्यवीरों के हाथ में था। परन्तु इतना उत्तम था कि किसी का कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। न कहीं चोरी की वारदात, न ठगी की। न किसी की जेब काटी गई और न किसी प्रकार ठगा गया।

भोजन का पर्याप्त और अधिक से अधिक प्रबन्ध था। छूत-अछूत किसी प्रकार का भेदभाव न था। इतना बड़ा मेला केवल शिक्षितों का था। कोई मैला कपड़ा पहने हुए कहीं भी दिखाई नहीं देता था।

उत्सव की एक मुख्यता

प्रत्येक यात्री अनुशासन में था। जो नियम जहां के थे, उनका पूरा पूरा पालन किया जाता था।

एक उदाहरण

बाजार में एक नियम रक्खा गया था कि कोई भी नशे की वस्तु, जिसमें खाने-पीने और सूंघने का तम्बाकू शामिल है, सारे कैम्प में कहीं नहीं बेचा जाय। मेले के दिनों की ही बात है कि प्रयाग हाईकोर्ट के एक वकील की समझ में यह बात नहीं आई कि क्या यह सम्भव है कि इतने बड़े मेले में सिगरेट न पीया और बेचा जाता हो? इस बात कीजांच के लिये वे स्वयं बाजार में गये और एक पान वाले की दुकान पर जाकर उन्होंने सिगरेट मांगी। उसने मना कर दिया। वकील साहब के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने देखा कि एक सिगरेट का एक रुपया देने पर भी, उन्हें सिगरेट नहीं मिल सकी।

पुलिस की सहायता

हमने पुलिस की सहायता इस तरह से ली थी कि पुलिस के उच्च अधिकारियों को सलाह देकर, जो-जो रास्ते मेले की ओर जाते थे, उन सब पर दिन रात पुलिस के पहरे का प्रबन्ध करा दिया कि वे किसी गुंडे को मेले की तरफ न जाने दें। पुलिस से इस प्रबन्ध के करा लेने का फल यह हुआ कि गुंडों से मेला पाक साफ रहा और किसी प्रकार की दुर्घटना नहीं हो सकी। कैम्प में तो यह समझा जाता रहा कि पुलिस का कुछ प्रबन्ध नहीं है। परन्तु इस प्रकार पुलिस की सहायता ली जो हमारे उत्सव में बड़ी भारी सहायक सिद्ध हुई।

मण्डप का प्रबन्ध

मण्डप का भी एक बहुत बड़ा अहाता था, जिसमें शताब्दी के समस्त कार्यालय डाक तथा तारघर के आफिस थे। इसी अहाते में हम लोगों के निवास स्थान थे। एक छोटा सा कमरा कठिनता से 9 फुट लम्बा और छः फुट चौड़ा था, इसमें मुझे 9 महीने बिताने पड़े थे। इसकी नीचे की मंजिल में अन्य कार्यकर्ता रहते थे। उस समय लाउडस्पीकर का प्रचलन न था, इसलिये व्याख्यान देने वालों के लिये बहुत ऊंचा मंच बनाया गया था, परन्तु वह भी पर्याप्त सिद्ध नहीं हुआ। तब मजबूरन उस ऊंचाई पर रक्खी हुई मेज पर खड़े होकर वक्ताओं ने भाषण दिये।

नगर कीर्तन

महर्षि दयानन्द ने जिस कुटी में, दण्डी विरजानन्द जी से शिक्षा पाई थी, उसे देखने के लिये, शताब्दी कैम्प से प्राय: सभी नर-नारी 19 फरवरी 1925 को गये थे। उनके इस प्रकार जाने से नगर कीर्तन की सूरत बन गई थी। इतना विशाल नगर कीर्तन आर्यसमाज के इतिहास में ''न भूतो न भविष्यति'' की कहावत चरितार्थ करने वाला था। नगर कीर्तन के दोनों किनारे सायंकाल के समय शताब्दी नगर में थे, आने वालों का तांता जो बंधा था वह समाप्त होने में नहीं आता था। यहां तक कि सबसे पहले जाने वाले नगर कीर्तन को समाप्त करके जब कैम्प में लौट आए थे, तब भी नगर कीर्तन में जाने वालों का तांता टूटा नहीं था। इस तरह से यह महोत्सव अभूतपूर्व था।

जन्म शताब्दी मनाने से लाभ : इस शताब्दी के मनाने से यह लक्ष्य हुआ कि देश विदेश से जो लोग इस शताब्दी में सम्मिलित हुये थे, शताब्दी की सफलता को देखकर उनका उत्साह दुगुना हो गया और शताब्दी से घर लौटकर सभी आर्य लोग बड़े उत्साह से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लग गये। आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार और साहित्य प्रकाशित करके उसे बांटने की योजना भी इस अवसर पर बनाई गई और इस कार्य का अच्छा परिणाम भी निकला।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थिति में सुधार : शताब्दी के आयोजन से पहले सार्वदेशि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। यद्यपि स्वामी जी बड़े उत्साही तथा युगपुरुष थे, किन्तु कुछ लोग जिनमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कुछ अधिकारी थे, स्वामी जी के बड़े विरोधी थे और स्वामी जी के कार्यों में लगातार बाधा डालते रहते थे, जिसके कारण सार्वदेशिक सभा में कुछ भी कार्य नहीं हो पा रहा था। इस कारण से सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि जब लाचार होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा से त्यागपत्र दिया, उस समय सार्वदेशिक सभा पर चार रुपये दस आने का कर्ज था। इस शताब्दी के अवसर पर धन के लिये अपील की गई परिणामस्वरूप एक लाख से अधिक रुपया दान में प्राप्त हुआ। इसी दान के पैसों से सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति सुधर गई। तब सार्वदेशिक सभा ने उस धन से आर्यसमाज के प्रचार का प्रबन्ध किया और साहित्य का प्रकाशन भी किा, जिसके कारण आर्यसमाज की बड़ी उन्नति हुई। उसी अवसर पर दयानन्द ग्रन्थ माला का शताब्दी संस्करण, आचार्य मेधाव्रतकृत दयानन्दलहरी और साधु टी.एल. वासवानी कृत महर्षि दयानन्द विषयक पथ प्रदीप (टार्च बेरियर) नामक ग्रन्थ भी प्रकाशित हुये थे, यद्यपि श्री वासवानी जी आर्यसमाज से सम्बद्ध नहीं थे, पुनरपि महर्षि दयानन्द उनकी कृति अनुपम है।

सम्पर्क सूत्र-111/19 आर्यनगर झज्जर
मो० 9996227377

शोक-सन्देश

अग्निवेश जी नहीं रहे

संसार के अनेक देशों में आर्यसमाज के संन्यासी के रूप में प्रसिद्ध और बंधुआ मुक्ति मोर्चा सगठन के संचालक स्वामी अग्निवेश जी का लम्बी रुग्णता के पश्चात् ११ सितम्बर २०२० को दिल्ली में निधन हो गया। वे ८२ वर्ष के थे। १२ सितम्बर को इनका पार्थिव शरीर ७ जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली कार्यालय में इनके श्रद्धालुओं तथा अन्य लोगों के लिये अन्तिम दर्शनार्थ रख दिया था। वहां भी लगभग ३००० सज्जन पधार चुके थे। उसी दिन चार बजे स्वामी जी के सोहना रोड (गुडगांवा) के बहलपा स्थित अग्निलोक आश्रम में इनकी अन्त्येष्टि की गई। अन्त्येष्टि के समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मन्त्री श्री विट्ठलराव जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर, स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली तथा इनके वेदपाठी ब्रह्मचारी, स्वामी रामवेश जी जींद, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी कुरुक्षेत्र, आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी अग्न्यानन्दी जी, आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा, श्री विनय आर्य मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा , डा. वेदप्रताप जी वैदिक, ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य, श्रीप्रेमपाल जी शास्त्री पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान, श्री रामपाल शास्त्री गौतमनगर, श्री राजवीर शास्त्री फरीदाबाद, श्री विवेकानन्द शास्त्री रोहतक, श्रीकृष्ण शास्त्री बोहर, श्री इन्द्रजीत शास्त्री किसरैंटी, डा. धर्मवीर झज्जर, बहन पूनम आर्या रोहतक, बहन प्रवेश आर्या रोहतक श्री ऋषिराज शास्त्री रोहतक, श्री आचार्य हनुमत प्रसाद जी व उनके अनेक साथी, श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक, स्वामी विजयवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी विधायक हरिद्वार, श्री राजेन्द्र आर्य धनखड़ इत्यादि लगभग ३०० सज्जन उपस्थित थे। अन्त्येष्ठि में १२ टीन घी और ३७० किलो सामग्री लगी थी।

श्रीमती सोनिया गांधी, डा. मनमोहन, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, अशोक गहलोत राजस्थान मुख्यमंत्री, सचिन पायलेट, अभय चौटाला, नीतिशकुमार मुख्यमंत्री बिहार, भूपेश मुख्यमंत्री छत्तीसगढ, हेमन्त शोरेन झारखण्ड, प्रशान्त भूषण वकील, चौ वीरेन्द्र सिंह डूमरखां, उपराष्ट्रपति वकैया नायडू, राधाकृष्णन व राष्ट्रपतिके पुत्र, श्री हरदीपपुरी उड्डयन मंत्री श्रीमती मायावती आदि के शोक संदेश प्राप्त हुए हैं।

इसके अतरिक्त आर्यजगत् के अनेक गणमान्य नेताओं ने अपने शोक संदेश भेजकर स्वामी अग्निवेश के प्रति हार्दिक संवेदना प्रेषित करते हुए इनकी आत्मा की सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

२९ सितंबर को गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली में शांतियज्ञ तथा प्रेरणा सभा हुई जिसमें हरयाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आदि स्थानों से आर्यसमाज तथा आर्यों ने भाग लिया।

निवेदक-सुधारक संवाददाता

गुरुकुल-गौरव

-डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'

भाग एक

क्रान्ति-शान्ति की खान हैं गुरुकुल।
संस्कृति के जय-गान हैं गुरुकुल।
तक्षशिला-नालन्दा जैसे धरती के
वरदान हैं गुरुकुल।
चरवाहे को मुकुट दिलाते
उन्नति के सोपान हैं गुरुकुल।
गर्व हरण कर सिकन्दरों का
विष्णु गुप्त के ज्ञान हैं गुरुकुल
भारत भाग्य विधाता हैं ये
ज्ञान और विज्ञान हैं गुरुकुल।
सर्वांगीण विकास विजय पथ
बल विक्रम बलिदान हैं गुरुकुल।
तमस तमीचर यहां न टिकते
अतुलनीय बलवान हैं गुरुकुल
गुरुकुल का इतिहास सनातन
वैदिक अग्न्याधान हैं गुरुकुल।
आर्ष पाठ विधि के उन्नायक
अमल धवलप्रतिमान हैं गुरुकुल।
वेद सूर्य के प्रबल प्रचारक
कौन कहे अनजान हैं गुरुकुल
दैवी नाव विमान हैं गुरुकुल।
अनुपम अद्‌भुत ऋषि मुनियों के
सबसे अधिक महान् हैं गुरुकुल।
है सच्चा आनन्द यहीं पर
सचमुच स्वर्ग समान हैं गुरुकुल।
चेतन हैं जड़ नही **'मनीषी'**
वर्णाश्रम की जान हैं गुरुकुल।

भाग दो

आन बान औ'शान हैं गुरुकुल
सच्चे स्वर संधान हैं गुरुकुल।
आर्य जनों के मान हैं गुरुकुल
सामवेद के गान हैं गुरुकुल।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग
भारत की पहचान हैं गुरुकुल
संस्कृत है तब हीं संस्कृति है
अटल अडिग चट्टान हैं गुरुकुल।
सरस्वती ही रसस्वती है
सारस्वत संतान हैं गुरुकुल।
एक व्याकरण सूर्य अनोखा
विरजानन्द समान हैं गुरकुल
दयानन्द निकलेंगे इनसे
तर्क प्रवण धनवान् हैं गुरकुल
शब्द ब्रह्म के अनुसंधाता
विरले अनुसंधान हैं गुरुकुल।
अग्नि वायु आदित्य अंगिरा
ऋषियों के समान हैं गुरुकुल
शक्ति भक्ति अनुरक्ति अनोखी
बच्चों की मुस्कान हैं गुरुकुल
शव को भी शिव करने वाले
गंगा तट के धान हैं गुरुकुल
धर्म अर्थ कामना मोक्ष के
चतुर्मुखी फलदान हैं गुरुकुल।
कालरात्रि की काट यही हैं
अद्‌भुत स्वर्ण विहान हैं गरुकुल।
ष्णुरु बिन ज्ञान नहीं है संभव
विधि के अमर विधान हैं गुरुकुल।
मोहन मनमोहक मनमोहन
ओमानन्दी तान हैं गुरुकुल।
विश्वंभर सी लगन **'मनीषी'**
श्रद्धानन्दी शान हैं गुरुकुल।।

आयुष्मान् देवांश के नामकरण संस्कार पर पूजनीय महाशय श्रीमान् बलवन्तसिंह जी आर्य को सादर समर्पित

ग्राम गुहांड में रूक्का पड़ग्या यो कौन महाशय आग्या।
सन्ध्या-हवन नहीं करने वालों की काड्ढणीया खामी आग्या।

१. श्री हरकेराम का महाशय बलमत जग में निराला होग्या।
दोनों समय सन्ध्या हवन करके खाना फिर वह खाता।
जो ये काम नहीं करता पीछे उसके पड़ जाता।
उसको खूब समझाता।
अपने और बहन के बच्चों को गुरुकुल में पढाग्या।।

२. खेतीबाड़ी का कार्य करके वे दान बहुत किया करते।
गरीब असहाय इन्सान की सहायता सदा किया करते।
ढोंगी और पाखण्डियों की धज्जियां सदा उड़ाते थे।
ओ३म् ध्वजा हाथ में लेकर सत्याग्रहों में जाया करते।
अपने उत्तम कर्मों से वो नाम बहुत कमाग्या।।

३. ब्राह्म मुहूर्त में उठकर वो प्रभु के गीत गाया करते।
अपने और पराये का भेद नहीं किया करते।
आर्यसमाज के कामों में सबसे आगे रहा करते।
कष्ट चाहे कितना भी हो पीछे नहीं हटा करते।
वैदिक धर्म के प्रचार को वो बहुत आगे बढाग्या।।

४. आपके सभी बेटे बेटियां काम आर्यसमाज का कर रहे।
अपनी बल बुद्धि अनुसार योगदान अपना कर रहे।
नेकी कर्म करके आप स्वर्गलोक में विराज रहे।
आपके आशीर्वाद से हम सभी फल फूल रहे।
अब चौथी पीढी में देक्खणीया अर्जुन-देवांश आग्ये।।

धातव्य- ग्राम मकड़ौली वासी श्रीमहाशय बलवन्तसिंह जी आर्य के सुपुत्र और गुरुकुल झज्जर के स्नातक श्री सत्यव्रत शास्त्री के पौत्र, श्री सत्येन्द्र के पुत्र श्री देवांश का नामकरण महाशय बलवंतसिंह आर्य के सुपुत्र आचार्य वियजपाल योगार्थी ने कराया। उसी उपलक्ष्य में महाशय जी के भानजे ने यह कविता अपने पूज्य मामा श्री म० बलवंतसिंह जी को समर्पित की है। महाशय जी के पुत्र विजयेन्द्र के पौत्र का नाम अर्जुन है।

-सम्पादक कविता रचयिता-डॉ. राजकुमार आचार्य, झज्जर

आर्य आर्युवेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

की विशेष ओषधियां

गन्धकारिष्ट

यह औषध पेट के प्रत्येक रोग के लिए रामबाण है पेट दर्द तो पहली मात्रा लेते ही बन्द हो जाता है

मात्रा :– 20 बूंद से 30 बूंद जल में मिलाकर लें।

मधुमेहासव

गुण :– मधुमेह की सर्वश्रेष्ठ एकमात्र औषध है।

सेवन :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजरोपरान्त लें।

अशोकारिष्ट

गुण : स्त्रियों के श्वेत–प्रदर, रक्त–प्रदर, गर्भस्त्राव रक्तपित, कटिपीड़ा, मासिक धर्म की अनियमितता आदि योनी–सम्बन्धी विकारों का नाशक।

मात्रा :– 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

अश्वगन्धारिष्ट

गुण:– मूर्च्छा, मिरगी, पागलपन, मस्तिष्क विकार, स्त्रियों के हिस्टीरिया, ज्ञान–तन्तुओं की निर्बलता एवं वायु–सम्बन्धी रोगों को दूर करता है

सेवक :– 2 तोला औषध समान जल मिलाकर प्रातः सायं भोजनोपरान्त लें

रोहितारिष्ट

गुण :– जिगर–तिल्ली, वायु गोला, गैस आदि में लाभकारी। पेट का रोग जब किसी भी औषध से ठीक न हो तो इसका चमत्कार देखें।

मात्रा :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

सितोपलादि चूर्ण

इसके सेवन से अरुचि, खांसी, क्षय रोग, श्वास रोग जीर्णज्वर और पाचनशक्ति की निर्बलता दूर होता है।

सेवक :– 1 माशा से 3 माशा तक प्रातः सायं शहद व 6 माशे घी में मिलाकर चाटना चाहिए। सूखी खांसी में बादाम रोगन से लें।

अमृतारिष्ट

गुण :–जीर्णज्वर, विषमज्वर तथा तपोदिक के ज्वर में लाभकारी है

मात्रा :– 1 से 2 तोला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

गैसहर चूर्ण

यह चूर्ण पेट दर्द, गैस, अफारा, कब्ज व हर प्रकार के उदर रागों में उपयोगी है।

मात्रा :– 2 से 4 ग्राम तक गर्म पानी से लें।

गोक्षुरासव

गुण :– मूत्रकृच्छ्र, सुजाक, मूत्र का रूक–रूक कर वा जलन होकर आना आदि मूत्र सम्बंधी रोगों एवं पित्तप्रमेह के लिए उत्तम है।

मात्रा :– 2 तोले औषध्र समान जल में मिलाकर भोजनोपरान्त लें

अविपत्तिकर चूर्ण

यह पैत्तिक विकारों के लिए बहुत उपयोगी है अम्लपित्त की पित्त की विकृति से ही यह रोग बढ़ता है। उस विकृति को दूर करने के लिए इस चूर्ण का उपयोग किया जाता है। यह विरेचक होने के कारण दस्त भी साफ लाता है और कब्जियत दूर करता है। इसके सेवन करने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। भूख लगती है।

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-[redacted]

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।